OM 21 DELHI_Page 1 and 2 14/01/2015 07:53 Page 7

सात फेरों के सात वचन निभा सच्ची सुहागिन बनी

अनुभव...

- ब्र.कु. प्रमिला सिरके, श्रीरामपुर

मेरी शादी फरवरी 1995 में हुई। उससे दो महीने पहले दिसंबर में मैं ज्ञान में आयी। एक संबंधी द्वारा मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ। मैं किसी सेंटर आदि पर नहीं गई थी। 18 जनवरी को मेरे संबंधी ने कहा कि अब तो आपकी शादी होने वाली है, फिर कभी सेंटर नहीं देख पाओगी, अगर सेंटर देखना है तो चलो। मैं 18 जनवरी को सुबह अमृतवेले ही सेंटर चली गई, पूरे दिन सेंटर पर रही, रात को आठ बजे प्रोग्राम पूरा हुआ फिर हम घर आए। मैं चाहती थी कि जिस घर में मेरी शादी हो उस घर के सभी लोग ज्ञान में चलते हों। मेरे संबंधी ने बताया कि जिससे आपकी शादी होने वाली है उसको सुबह अमृतवेले सकाश दो, तो मैं अपनी मेहंदी वाले दिन पूरे समय उनको सकाश देती रही। फरवरी में जिस दिन हमारी शादी थी, मैं पूरे दिन योग में थी। जब हम फेरे ले रहे थे तो मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे मैं बाबा के साथ फेरे ले रही हूँ। मुझे यही लगा कि मेरी शादी बाबा के साथ हो रही है। फिर जब शादी होने के बाद मैं ससुराल गई तो बैग में कुछ कपड़े और साप्ताहिक पाठ्यक्रम की पुस्तक और भी कई पुस्तकें और बाबा के गीतों की कैसेट लेकर गयी। शादी की पहली रात मैंने अपने पति को कोर्स कराया आत्मा से लेकर स्वर्ग तक पूरा, सुबह के 4 बजे तक कोर्स चला। उनको कुछ भी पता नहीं था कि ओमशान्ति क्या है लेकिन जो कुछ मैंने सुनाया उसको बहुत शान्ति से सुना। फिर मुझे बोला कि आप तो इतने दिन ब्रह्मचर्य में रहे, अभी भी रहना है क्या? तो मैंने कहा कि इतने दिन नहीं रहे हैं बल्कि 63 जन्म यही किया है सिर्फ ये एक जन्म बाबा को देना है तो हम लक्ष्मी-नारायण बन जायेंगे। उनको बहुत अच्छा लगा, बहुत ध्यान से सबकुछ सुना जो सुनते-सुनते अमृतवेला हो गया। सुबह वो 7 बजे सेंटर पर पहुँच गये। उनका ऑफिस और सेंटर नज़दीक था । वो गये तो मुरली चल रही थी फिर मुरली पूरी होने के बाद उनका उसी दिन से कोर्स शुरु हो गया। सात दिन का कोर्स होने के बाद मुरली शुरु हो गई। घर वालों ने पूछा कि कहाँ जाते हो तो कहा कि व्यायाम करने जाते हैं ऐसे 15 दिन तक झूठ ही बोला, उन्होंने फिर पूछा तो बताना पड़ा कि ओमशान्ति का केन्द्र है वहाँ जाते हैं। मुरली सुनते-सुनते मेरे पति पक्के हो गये। लेकिन एक साल के बाद घर वालों का शुरु हो गया कि अब बच्चे चाहिए, और एक साल हो गया था तो हमको बाबा मिलन के लिए भी जाना था तो हमने घर वालों से पूछा कि हम बाबा से मिलने के लिए जायें तो उन्होंने कहा कि वहाँ अगर जायेंगे तो आप वापिस नहीं आयेंगे इसलिए मना कर दिया। ऐसे करते-करते दो साल हो गया। हमें जाने नहीं दिया, फिर तीसरे साल हमने पिताजी से पूछा कि हमको जाना है सिर्फ देखने के लिए तो उन्होंने कहा कि ठीक है जाओ, सिर्फ पिता जी को ही पूछा और रात को 10 बजे के बाद अपनी पैकिंग की, किसी को पता भी नहीं चलने दिया और सुबह 4 बजे जब सभी सो रहे थे तो हम निकल गये। जब वापिस आये तो डर लग रहा था कि वो क्या बोलेंगे। आने के बाद तो घर वालों ने कई दिन तक बात ही नहीं की। फिर उन लोगों को लगा कि अभी जाके देख के आ गये, अब ओमशान्ति में नहीं जायेंगे छोड़ देंगे। दूसरे साल भी हम बाबा से मिल के आये किसी से नहीं पूछा, पिताजी का हमें पूरा सहयोग था। घर वालों ने मिलकर प्लैनिंग की कि इनको अपने मायके भेजना होगा क्योंकि इन्होंने ही मेरे बेटे को ज्ञान दिया है, फिर मुझे घर वालों ने अपने मायके भेज दिया। एक महीने रहकर फिर मैं वापिस आ गयी। घर वालों को लगा कि अभी तो ये ज्ञान छोड़ देंगे। लेकिन फिर बाबा मिलन का समय आया और हम गये। आने के बाद इन लोगों ने प्लैनिंग करके रखी थी कि दोनों को निकालेंगे घर से। हम रात को 11 बजे आये और सो गये। सवेरे पाँच बजे जब मेरे पति नीचे आये स्नान करने के लिए तो सब हमारे पहले उठ के हॉल में बैठ गये और कहा कि अभी स्नान नहीं करना है आप पहले घर के बाहर निकलो, यहाँ आपको रहना ही नहीं है। या तो आप रहेंगे या हम रहेंगे। मैं सुनती रही और डर गयी कि अभी क्या करना चाहिए। इन्होंने घर वालों को कहा कि आप समझो कि हम क्या करते हैं। लेकिन उन्होंने कहा कि हमें कुछ नहीं करना है, बस आप घर से निकलो। उन्होंने सुबह सात बजे ही हमें घर से निकाल दिया तो हम सेंटर पर चले गये। जब सेंटर पर गये तो बहन जी को इतनी खुशी हुई कि अब आप बंधन मुक्त हो गई क्योंकि मैं कभी मुरली में नहीं जाती थी, मैं घर पर ही सुनती थी जो ये लिखकर लाते थे। मैंने कहा हम बंधनमुक्त नहीं हुए हैं, हमको घर से निकाल दिया है। फिर मैं सेंटर पर रह गई और मेरे पति ऑफिस में रहने लगे। मेरे पति ऑफिस में रहते थे और भोजन करने के लिए सेंटर पर आते थे। एक महीने के बाद फिर रूम लिया और वहाँ रहने लगे। फिर हमने बस उतना ही थोड़ा सा सामान खरीदा जितना बहुत ज़रूरी था। लोग देखने के लिए आते थे कि ये इतने बड़े इंजीनियर, इतनी प्रॉपर्टी है, ये यहाँ कैसे रहते हैं। सोने के लिए भी सिर्फ चटाई थी, वो पूरा त्याग का समय था। दो-तीन साल हम वैसे ही रहे, फिर पिताजी को रिटायरमेंट की जो पेंशन मिली थी वो पूरा इस बंगले में उन्होंने खर्च किया जिसमें हम रह रहे हैं। वो शुरु से हमारे सहयोगी रहे, हमें मधुबन भेजते थे। जब मैं ससुराल में रहती थी तो बहुत पेपर आते थे तो मैं बाबा से कहती थी कि बाबा ये सब तो मैं आपके लिए कर रही हूँ , तो साकार बाबा के बहुत अनुभव होते थे। बाबा मुझे हर काम में मदद करते थे और कहते थे कि ये बस थोड़े दिन के लिए है। हॉल में जब बाबा सबसे मिलते थे तो मुझे मुँह में टोली खिलाते थे।

संगमयुगी पार्वती को मिले सत्यनारायण भी...

प्रमिला के पति से - सिरके भाई (पेशे से सिविल इजीनियर) की उस वक्त (सुहाग की पहली रात) की फीलिंग उन्हीं के शब्दों में -

जब आपको ये सुनाते थे तो आपको कैसा लगता था? जब आपका पहला दिन था और ये आपको सुनाने लगे तो आपको कुछ संकल्प नहीं आया कि ये क्या रामायण लेकर बैठ गयी है?

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था लेकिन इनके प्योरिटी के वायब्रेशन मुझे बहुत लाइट फील करा रहे थे। जैसे छोटा बच्चा होता है ऐसी फीलिंग हो रही थी। जब वो बोल रही थी तो ऐसा लग रहा था जैसे कोई छोटा बच्चा होता है तो उनकी बात सुनते-सुनते मैं भी छोटा बच्चा बन गया। जब मैं सेंटर गया तो मुरली सुनते हुए ऐसा लगता था जैसे कोई बहुत अच्छे संस्कार डाल रहा है, मुझे मुरली बहुत अच्छी लगती थी। अमृतवेले अचानक ही मेरी नींद खुली तो मुझे ब्रह्मा बाबा का साक्षात्कार हुआ, पूरा लाइट ही लाइट दिख रहा था।

कूच वेहर-प. बंगाल। राजकन्या उत्तरा देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सम्पा। साथ हैं उनकी पुत्र वधू।

वदरपुर-असम। बराक वैली सीमेंट फैक्ट्री के अधिकारियों के लिए आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डायरेक्टर मुकेश अग्रवाल, ब्र.कु. भगवान, ब्र.कु. मोनिका तथा अधिकारीगण।

कैथल-हरियाणा। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.पुष्पा, ब्र.कु.रामप्रकाश, ब्र.कु.गुरभजन, ब्र.कु.शकुंतला तथा अन्य।

सम्बलपुर-ओडिशा। सांसद नगेन्द्र प्रधान तथा पूर्व सांसद प्रमिला बहीदार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पार्वती।

राउरकेला-ओडिशा। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए स्वामी सदानंद सरस्वती, बी.पी.यू.टी. रजिस्ट्रार मिहीर नायक, एन.आई.टी. रजिस्ट्रार एस.के. उपाध्याय, प्रनय के सब एडिटर सनापिका घदई तथा अन्य।

हेतौदा-नेपाल। त्रिदिवसीय 'तनाव मुक्त जीवन शैली' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए निदेशक राजीदी, पूर्व सांसद मनु सिगदेल, समाजसेवी हरीबसन वेतवाल, डॉ. हरी शर्मा, ब्र.कु. सुशीला, ब्र.कु. उषा तथा अन्य।

जालोर-राज.। 'इगनाइट द यूथ' कार्यक्रम के अंतर्गत पुलिस लाइन में कार्यक्रम के दौरान पुलिसकर्मियों के साथ समूह चित्र में ब्र.कु. जीतू, ब्र.कु. रंजू तथा ब्र.कु. उमा।

सिवान-बिहार। 'भारत में भगवान आये हैं' नामक आध्यात्मिक रैली निकालते हुए पूर्व नगर सभापति अनुराधा गुप्ता, वार्ड काउंसलर रंजना श्रीवास्तव, ब्र.कु. सुधा तथा अन्य।